पवन उड़ाकर ले गई रे .....

पवन उड़ाकर ले गई रे, अम्बे माँ की चुनड़िया ।
माँ की चुनड़िया, मेरी माँ की चुनड़िया ।।

उड़–उड़ चुंदड़ ब्रह्मलोक में पहुंची।
गायत्री जी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुंदड़ स्वर्ग लोक में पहुंची।
इन्द्राणी जी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुन्दड़ बैंकुण्ठ में पहुंची।
लक्ष्मीजी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुंदड़ कैलाशपुरी में पहुंची।
गौराँजी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुंदड़ पंचवटी में पहुंची।
सीताजी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुंदड़ बरसाणा में पहुंची।
राधाजी के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

उड़–उड़ चुंदड़ सतसंगत में पहुंची।
अरे ! भक्तों के मन को भा गई रे ।। मेरी माँ ....

पुण्य उदय से ही मिले, सेवा का संयोग।
धनी पारदर्शी कई, दानी बिरले लोग।।